International Journal of Sanskrit Research 2023; 9(1): 135-138

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2023; 9(1): 135-138
© 2023 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 12-11-2022
Accepted: 14-12-2022

निधि
1) शोधच्छात्रा, संस्कृत विभाग, हिन्दू कालेज, मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत
2) महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
निधि
1) शोधच्छात्रा, संस्कृत विभाग, हिन्दू कालेज, मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत
2) महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली उत्तर प्रदेश, भारत

आचार्य ब्रह्मानन्द शुक्ल कृत 'श्रीगान्धिचरितम्' खण्डकाव्य में गाँधी चरित

निधि

सारांश
आचार्य ब्रह्मानन्द शुक्ल द्वारा रचित 'श्री गान्धिचरितम्' खण्डकाव्य में ।।। पद्यों मे महात्मा गाँधी जी के उदान्त चरित को अत्यन्त सुन्दर रूप में वर्णित किया गया है। इस खण्डकाव्य में गाँधी जी के त्याग, बलिदान, समर्पण, सत्य एवं अहिंसा आदि गुणो को व्याख्यायित करत हुए भारत की स्वतन्त्रता में उनके द्वारा किये गये अविस्मरणीय योगदान को दर्शाया गया है।

कूट शब्दः खण्डकाव्य, उदान्त, वर्णित, समर्पण, अविस्मरणीय

प्रस्तावना
आचार्य ब्रह्मानन्द शुक्ल संस्कृत के आधुनिक काव्यकारों में प्रमुख स्थान रखते हैं। शुक्ल जी ने भारतीय इतिहास के अविस्मरणीय उदान्त राष्ट्रीय चरित्रों को अपने काव्य का विषय बनाया है। 'श्रीगान्धिचरितम्' शुक्ल का अत्यन्त लोकप्रिय खण्डकाव्य है। इस खण्डकाव्य में 111 श्लोको में गाँधी जी के उदात्त चरित्र राष्ट्रभक्ति, देशसेवा, समर्पण, त्याग एवं बलिदान जैसे गुणों के विषय में सुन्दर वर्णन किया गया है। शुक्ल जी का यह खण्डकाव्य गाँधी जी के चरित्र चित्रण की प्रधानता के कारण एक चरितकाव्य के रूप में स्वीकार किया जा सकता है। गाँधी जी को इस काव्य के नायक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। एक श्रेष्ठ नायक में जिन गुणों का होना आवश्यक माना गया है, गाँधी जी उन गुणों को धारण करने वाले नायक हैं।
आचार्य विश्वनाथ ने अपने साहित्य दर्पण में नायक का लक्षण प्रस्तुत करते हुए लिखा है –

''त्यागी कृतो कुलीनः सुश्रीको रूपयौवनोत्साही।
दक्षोऽनुरक्तलोकस्तेजोवैदग्ध्यशीलवान्नेता।।''[1] 3/30

अर्थात् त्यागी (दानशील दाता) कृती (वीर, विद्वान, पुण्यात्मा), कुलीन (सत्कुलोत्पन्न), लक्ष्मीवान अथवा शोभा सम्पन्न, रूप, यौवन और उत्साह से युक्त दक्ष जिसमें प्रजाएं अनुरक्त हैं, तेजस्वी, चतुर और शीलवान नेता (नायक) होता है। इसी प्रकार सामान्यतः ये गुण गाँधी जी मे भी मिलते हैं। इस दृष्टि से गाँधी जी उदात्त चरित्र वाले श्रेष्ठ नायक हैं।
शुक्ल जी ने अपने खण्डकाव्य 'श्रीगान्धिचरितम्' में गाँधी जी के चरित्र की उदात्त एवं अनुकरणीय विशेषताओं को प्रस्तुत किया है। गाँधी जी सत्य एवं अहिंसा के पुजारी थे। वे आजीवन सत्य और अहिंसा के कठिन मार्ग पर ही चलते रहे। उन्होंने इन्हें ही अपना अस्त्र और शस्त्र बनाकर असाध्य कार्यो को सिद्ध किया और हमारे राष्ट्र को पराधीनता की बेड़ियों से आजाद कराया –

''अहिंसया सत्यबलेन चैव,
कार्याण्यसाध्यान्यपि यान्ति सिद्धिम्।
इत्थं व्रतं यस्य सदा समृद्धम्,
जयत्यसौ मोहनदासगान्धी।।''[2]

गाँधी जी का जन्म एक श्रेष्ठ कुल में हुआ था। उनका कुल अपार गुणों से युक्त एवं गौरवशाली था। इनके कुल की ख्याति चारों ओर व्याप्त थी।
इनके कुल की कीर्ति सब ओर प्रसिद्ध थी तथा इनका उत्कृष्ट प्रताप से युक्त गाँधी कुल आज भी अपनी उत्कृष्टता के कारण समस्त संसार में शोभित हो रहा है–

''आसीदसीमगुणगौरवगुम्फिचेता
विज्ञानराशिरभिवांछित पुण्यपुंजः।।
गान्धीकुलेऽतिविमले तपसां निधाने
सौराष्ट्रराज्यजनतोत्तम चन्द्रमन्त्री।।''[3]

महात्मा गाँधी जी का जन्म इस संसार के लिए एक अवतार की तरह माना जा सकता है, उनकी समस्त शक्ति संसार के कल्याण में थी, वे आजीवन राष्ट्रहित में कार्य करते रहे। वे अपने राष्ट्र के प्रति ही प्रेम एवं समर्पण का भाव नहीं रखते थे बल्कि सम्पूर्ण विश्व को अपनी आत्मा स्वरूप मानते थे। वे सम्पूर्ण विश्व के कल्याण कार्यो में स्वयं को तत्पर रखते थे। इसी कारण शुक्ल जी ने गाँधी जी के जन्म को श्रीगणेश एवं श्रीकृष्ण के जन्म के समान बताया है–

''अथो गणेशं जगदम्बिकेव
श्री कृष्णचन्द्रं खलु देवकीव।
विश्वात्मकं विश्वहिते रतञ्च
सा मोहनं पुत्रमसूत काले।''[4]

गाँधी जी अनेको अनेक गुणों के धाम थे उनके यही गुण आज भी उन्हें स्मरण रखने के लिए एवं उनका अनुकरण करने के लिए उत्साहित करते हैं। गाँधी जी की आत्मा प्रत्येक देशवासी के लिए स्वयं का ही रूप मानती थी। वे सदैव जनसेवा के कार्यो मं लगे रहे एवं दूसरों को भी यही प्रेरणा देते रहे कि समस्त राष्ट्र ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण संसार प्रेमबन्धन से बंधा हो। किसी के हृदयों में विद्वेष्य की भावना न हो, सभी भाईचारे के भाव के साथ जीवन व्यतीत करें। इस प्रकार के गुणों से युक्त गाँधी जी इस सौराष्ट देश में अवतार लेने वाले सम्पूर्ण विश्व के लिए गुरू स्वरूप थे। धैर्य की मूर्ति स्वरूप वे गाँधी जी बालक होने पर इतना धैर्य धारण किये हुए थे जिसकी किसी बालक में कल्पना भी नहीं की जा सकती। वे अपार गुणों से युक्त अपने माता–पिता की तपस्या के फल के रूप में संसार के उद्धार के लिए अवतीर्ण हुए थे–

''पित्रोस्तपोव्रातफलैरमेयैः
समेधितो विश्वगुरूर्यथा सः।
बालोऽप्यबालोचित धैर्यसिन्धुः
सौराष्ट्र देशेऽवततार कृष्णः।।''[5]

आचार्य शुक्ल जी के खण्डकाव्य के नायक एवं राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी का चरित्र उनके आत्म–बल के कारण और भो अधिक महत्वपूर्ण है। गाँधी जी आत्मबल के धनी थे। अपने इसी आत्मबल के द्वारा उन्होंने समस्त राष्ट्र को सुदृढ़ एवं दृढ़निश्चयी बनाया। सम्पूर्ण राष्ट्र के निवासियों में यह विश्वास जाग्रत किया कि वे अपने देश को पराधीनता के अभिशाप से स्वयं ही मुक्त कराने में पूर्णतः समर्थ हैं और उन्हें किसी के डर से अपने जीवन को व्यर्थ ही नहीं खोना है। देशवासियों में एक नयी ऊर्जा, नया आत्मबल एवं सजगता को भरने वाले महान व्यक्तित्व महात्मा गाँधी जी ही थे। गाँधी जी ने स्वयं के साथ–साथ समस्त देशवासियों को दृढ़ आत्मबल से पूर्ण रहने के लिए प्रेरित किया। वे बचपन से ही एक वीर बालक रहे जिसके कारण अपने जीवन की अत्यधिक भयभीत करने वाली परिस्थितियों में भी विचलित नहीं हुए। वे सदैव निश्चित बुद्धि होकर कार्य करते रहे जिसके लिए उन्हें अपने प्रियजनों का भी आश्वासन प्राप्त होता रहा–

''एवंविधानि बहुभीतिकराणि दृष्टवा
वृत्तानि नैव विचचाल स वीरवालः।
आरूह्य निश्चितमतिर्ननुवारिपोत
माश्वासितः प्रिय जनैरथ संप्रतस्थे।''[6]

गाँधी जी के विषय में शुक्ल जी ने अपने खण्डकाव्य में बताया है– जब गाँधी जी वकालत की पढ़ाई करने के लिए लन्दन गये थे उस समय उनकी माता उनके विषय में अत्यन्त चिन्तित थी। उन्हें यही भय बना हुआ था कि दूसरे देश में जाकर मेरा पुत्र कुसंगत में न पड़ जाये। मांस आदि खाने के दुर्गुणो से युक्त विदेशियों के सम्पर्क में आकर कहीं इन अवगुणों को ग्रहण न कर ले, इसीलिए गाँधी जी की माता उनके विदेश जाकर पढ़ाई करने के पक्ष में नहीं थी परन्तु गाँधी जी अपनी माता, मातृभूमि एवं संस्कृति व संस्कारों से अत्यन्त प्रेम करते थे। उन्होंने अपनी माता को पूर्ण रूप से आश्वस्त करते हुए यह विश्वास दिलाया कि वे अपना धर्म, अपनी संस्कृति व अपने संस्कार कभी नहीं भूलेंगे आर दृढ़ता के साथ अपने धर्म को सुरक्षित रखेंगे और उन्होंने अपनी दृढ़ता का परिचय देते हुए ऐसा ही किया। उन्होंने अपने संकल्प को इतना दृढ़ रखा कि वहां दुर्गुणों से युक्त मित्रों के सम्पर्क में आने के उपरान्त भी अपने संयम को नहीं छूटने दिया एवं अपने संस्कारों के प्रति दृढ़ रहे। उन्होंने अपनी माता के प्रति जो प्रतिज्ञा की उसे कभी भंग नहीं होने दिया–

''क्लेशाननेकान् विगणयय तत्र
मित्रैस्तथा साधु निवोधितोऽपि।
मातुः पुरस्ताद्विहितां प्रतिज्ञां
सत्यां विधातुंशिथिलो न जातः।।''[7]

गाँधी जी का जन्म उनके माता–पिता या वंश के लिए ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व की उन्नति व शान्ति के लिए हुआ था। संसार में अनेक आत्माएं जन्म लेती हैं जिनसे उनके कुल की ख्याति होती है, उनका वंश लोकप्रियता को प्राप्त करता है परन्तु गाँधी जी ने इस सौराष्ट्र में जन्म सिर्फ अपने कुल या माता–पिता की उन्नति के लिए नहीं लिया बल्कि वह बालक समस्त विश्व के विनोद का कारण बनकर इस धरती पर अवतरित हुआ और जनमानस की सेवा में लग गया–

''भूमौ न जाने कवि वा भवन्ति
सुता स्ववंशोन्नतिहेतुभूताः।
सर्वात्मना विश्वविनोदहेतु
र्बालस्तु जातो ननु मोहनोऽयम्।।''[8]

गाँधी जी के हृदय में व्याप्त करूणा एवं कोमलता उनके महान व्यक्तित्व को और अधिक महान बनाती है। वे अत्यन्त सरल हृदय के स्वामी थे और इसी कारण देशवासियों को कष्ट एवं पीड़ा में देखकर उनका हृदय द्रवित हो जाता था। वे सदैव इसी प्रयास में तत्पर रहे कि अपने राष्ट्रवासियां की समस्त विपदाओं को समाप्त कर सकें। दक्षिण अफ्रीका में अपने देश के लोगो की दयनीय दशा को देखकर उनका हृदय शोक से भर गया। तब उन्होंने अपने देशवासियों को

उन विदेशियों के अत्याचारो से मुक्त कराया और उनकी क्रूरता के सामने हार न मानकर अपने कर्तव्य माग पर दृढ़ता के साथ चलते रहे –

''तत्र प्रयातोऽनुतताप दृष्टवा
तां दुर्दशां भारतभूजनानाम्।
गौरांगलौकेः प्रपदाहतोऽपि
कर्तव्यमार्गाद्विचचाल नैव।''[9]

करूणा एवं कोमलता ही नहीं बल्कि इसके साथ ही साथ सम्पूर्ण विश्व के प्रति प्रेम, सौहार्द एवं सेवाभाव श्री गाँधी जी के हृदय में समाहित थे। वे देश व देशवासियों की सेवा में ही नहीं वरन् समस्त संसार की सेवा करने का भाव रखते थे और जीवनपर्यन्त वे इसी कार्य में संलग्न रहे। जब उन्होंने लोगों को दुःखी व असहाय देखा तब उन्होंने लोगों को अपने दुःख से लड़ने एवं स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए जाग्रत किया। उन्होंने देश के लोगों की दयनीय दशा को देखकर यह संकल्प लिया कि वे अपने देश के समस्त नागरिकों को इन कष्टों से मुक्ति दिलाएंगे। देश–विदेश सभी जगह भारतीयों को प्रताड़ित देख उनका हृदय इसी भावना से व्याप्त हो गया कि जब तक मं अपने देशवासियों के सन्ताप को समाप्त नहीं कर देता तब तक सेवा मार्ग से नहीं हटूंगा, प्राणों को त्यागकर भी देश प्रेम एवं देश सेवा के लिए तत्पर रहूंगा –

''अतो मया निश्चितमेतदेव
प्राणार्पणोनापि करोमि सेवाम्।
कष्टानि दूरे परिहर्तुकामः
सेवासिधाराव्रतमाचरामि।।''[10]

गाँधी जी के देश प्रेम, त्याग एवं बलिदान को व्यक्त करते हुए शुक्ल जी उनके अद्वितीय समर्पण भाव को भी प्रदर्शित करते हैं। गाँधी जी अपने राष्ट्र के प्रति पूर्णतः समर्पित थे। लोगों के प्रति उनके सेवाभाव में उनका यह समर्पण स्पष्ट दर्शित होता है जिसके कारण वे सदैव लोगों के कष्टों को दूर करने में लगे रहते थे। गाँधी जी यही समर्पण का भाव अपने देशवासियों में भी देखना चाहते थे और इसके लिए लोगों में एकता का होना आवश्यक था। लोगो में एकता जाग्रत करने के लिए उन्होने भारतीयो को एक साथ, दृढ़ प्रतिज्ञ होकर एक संघ बनाने को कहा जिससे उस संघ के माध्यम से सभी लोग मिलकर विचार करने योग्य विषयो पर अपना–अपना मत सबके साथ बांट सकें और राष्ट्रहित में निर्णय हो सके –

''कृत्वा प्रतिज्ञां ननु भारतीयाः
संघं समेषामथ योजयन्तु।
सर्वे मिलित्वा सुविचारणीयान्
विश्वाभियोगान् सुविचारयन्तु।।[11]

गाँधी जी ने जहां एक ओर भारतवासियों में स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए व्याकुलता एवं ललक को जाग्रत करने के लिए अनेक कार्य किये वहीं दूसरी ओर उन्होंने अपने सिद्धान्तों का भी पूरा ध्यान रखा। वे भारतीयों को जाग्रत तो करना चाहते थे पर साथ ही वे यह भी चाहते थे कि देशवासी सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलकर स्वतन्त्रता प्राप्ति करें। अंग्रेजो के असहनीय अत्याचार एवं देशवासियों की दुर्दशा ने उनके हृदय को व्यथित तो अवश्य किया परन्तु उन्हें उनके सिद्धान्तों से तनिक भी विचिलत न कर सके। उन्होंने समस्त भारतवासियों को सत्य व अहिंसा का ही मार्ग दिखाया और यही संदेश दिया कि यदि हमें अपने समस्त कष्टों व विपत्तियों से मुक्ति चाहिये तो हमें उत्साह–सम्पत्ति में सदैव तत्पर होना होगा क्योंकि किसी भी क्षेत्र में विजय प्राप्त करने के लिए सर्वप्रथम प्रयास उत्साह ही है। उत्साह सम्पन्न व्यक्ति की सभी विपत्तियां तत्काल ही विनाश को प्राप्त हो जाती हैं। गाँधी जी ने भारतीयों को यह विश्वास दिलाया कि हम असहाय या दुर्बल नहीं हैं और न ही हमारा देश किसी प्रकार से कमजोर है। गाँधी जी ने भारत को एक शक्तिशाली सिंह की भांति बताया जिसके सम्मुख जाने का साहस कोई तब तक नहीं कर सकता जब तक वह देर तक सोया न हो–

''विदेशिहस्ते पतितोऽपि हन्त
देशोऽधुनाध्येष विभाति सिंहः।
सिंहो यदि स्याच्चिरनिद्रितो न
को नाम तस्याभिमुखं प्रयाति।।''[12]

राष्ट्रीय चेतना एवं राष्ट्रभक्ति के भावों को धारण करने वाले गाँधी जी का हृदय सदैव अपने राष्ट्रवासियों के मध्य प्रेम और सौहार्द की भावना को विकसित करना चाहता था। वे सदैव लोगों को विरोधी भावों का त्यागकर आपस में प्रेमभाव रखने का सन्देश देते थे। गाँधी जी परस्पर प्रेम व सेवा भावना रखने में ही जीवन की सार्थकता मानते थे –

''यो मानवो नैव करोति सेवां
जीवेषु सर्वेषु च प्रेमभावैः।
किं तस्य भस्त्राकृतिशीलनेन
जनस्य जातेन कुजन्मना वा।।''[13]

गाँधी जी ने राष्ट्र के समस्त वीर स्वतन्त्रता सेनानियों को यही बताया कि सत्य एवं परिश्रम के मार्ग पर चलकर ही समस्त कार्यों को सिद्ध किया जा सकता है। अतः धीर पुरूषों को स्वराज्य प्राप्ति के लिए यही अहिंसा मार्ग अपनाना श्रेष्ठ है –

''सत्यश्रमाभ्यां सकलार्थसिद्धि
दिशन्ति धीरा ननु वीरधुर्याः।
अहिंसया केवलया स्वराज्य–
प्राप्तिर्मता में सुविनिश्चितैव।।''[14]

अपने देश व देशवासियों से अत्यधिक प्रेम करने वाले गाँधी जी का हृदय अपने देशवासियों की दासता एवं पीड़ा को देखकर बहुत आहत था और इसी कारण उन्होंने संकल्प लिया कि वे भारतीयों को दरिद्रता व दासता के शाप से मुक्त करायेंगे और इसी कार्य की सिद्धि में उन्होंने अपने जीवन की सार्थकता को निश्चित कर लिया –

''स्वजीवनं जीवनमेव कर्तुं
स्थिरप्रतिज्ञो भवितास्मि नूनम्।
दरिद्रयदास्यादिनिपीडितस्य
देशस्य मुक्तेर्भवितास्मि हेतुः।।''[15]

निष्कर्ष

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि ''आचार्य ब्रह्मानन्द शुक्ल'' के संस्कृत खण्डकाव्य 'श्रीगान्धिचरितम्' के नायक एवं हमारे राष्ट्रनायक व राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का चरित्र अनेक गुणों एवं विशेषताओं से युक्त है। राष्ट्र के प्रति उनका प्रेम, समर्पण, त्याग, बलिदान न केवल अविस्मरणीय है अपितु अनुकरणीय भी है। आज के युग में गाँधी जी के सिद्धान्तों

एवं संदेशों के अनुकरण की युवाओं को बहुत आवश्यकता है। गाँधी जी के प्रेमभाव, सत्य एवं अहिंसा के सिद्धान्तों पर चलकर आज का युवा राष्ट्रीय एकता, प्रेम एवं सौहार्द के साथ राष्ट्र उन्नति के कार्य को सिद्ध कर सकता है। अतः गाँधी जी के सिद्धान्त सदैव–सदैव अनुकरणीय है।

सन्दर्भ

1. आचार्य विश्वनाथ – साहित्य दर्पण – 3/30
2. आचार्य ब्रह्मानन्द शुक्ल – श्रीगान्धिचरितम्, श्लोक सं0–3
3. आचार्य ब्रह्मानन्द शुक्ल – श्रीगान्धिचरितम्, श्लोक सं0–4
4. आचार्य ब्रह्मानन्द शुक्ल – श्रीगान्धिचरितम्, श्लोक सं0–11
5. आचार्य ब्रह्मानन्द शुक्ल – श्रीगान्धिचरितम्, श्लोक सं0–12
6. आचार्य ब्रह्मानन्द शुक्ल – श्रीगान्धिचरितम्, श्लोक सं0–27
7. आचार्य ब्रह्मानन्द शुक्ल – श्रीगान्धिचरितम्, श्लोक सं0–29
8. आचार्य ब्रह्मानन्द शुक्ल – श्रीगान्धिचरितम्, श्लोक सं0–13
9. आचार्य ब्रह्मानन्द शुक्ल – श्रीगान्धिचरितम्, श्लोक सं0–56
10. आचार्य ब्रह्मानन्द शुक्ल – श्रीगान्धिचरितम्, श्लोक सं0–60
11. आचार्य ब्रह्मानन्द शुक्ल – श्रीगान्धिचरितम्, श्लोक सं0–68
12. आचार्य ब्रह्मानन्द शुक्ल – श्रीगान्धिचरितम्, श्लोक सं0–79
13. आचार्य ब्रह्मानन्द शुक्ल – श्रीगान्धिचरितम्, श्लोक सं0–62
14. आचार्य ब्रह्मानन्द शुक्ल – श्रीगान्धिचरितम्, श्लोक सं0–80
15. आचार्य ब्रह्मानन्द शुक्ल – श्रीगान्धिचरितम्, श्लोक सं0–34